भारत में महिलाओं की भूमिकाः मुद्दे और चुनौतियां

16

प्रो आभा सैनी
प्रो सुषमा सैनी

सारांश

8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर, देश के लोग महिलाओं पर गर्व महसूस करते हैं, जिन्होंने अपने नेतृत्व, हिम्मत और सहयोग से देश के विकास में अलग–अलग तरह से अपनी भूमिका निभाई है। किसी भी देश के सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है राष्ट्र निर्माण और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया गतिशील तभी होती है जब राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक चाहे वह स्त्री हो या पुरुष उसमें समान भागीदारी करता है भारत में महिलाओं की जनसंख्या आधी आबादी हैं, फिर भी उन्हें अपना अस्तित्व और सम्मान बनाए रखने के लिए कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और इसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शारीरिक और मानसिक मुष्किलें शामिल हैं।

भारत में, महिलाएं पारंपरिक तौर पर बहुत ज़्यादा बंधी हुई हैं उनके बारे में जो इमेज हमारे मन में हैं, वे सिर्फ शारीरिक और सामाजिक हालात की जरूरतों से ही नहीं बंधी है बल्कि मिथकों, कहानियों और संस्कृति और धर्म में भी गहराई से जमी हुई हैं, इसलिए यह उनकी भूमिका पर असर डालती हैं। देश के स्थाई और अक्षय विकास के लिए महिलाओं का सशक्त होना अत्यंत आवश्यक है इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक प्रतिबद्धता और एक विशेष दृष्टिकोण की आवश्कता है जो महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करें और उन्हें सशक्त बनाएं इस संदर्भ में सरकारी नीतियों के उचित क्रियान्वयन की भी आवश्यकता हैं।

शोध उद्देश्य एवं शोध पद्धति – प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारत में महिलाओं की भूमिका का वर्णन करना है यह शोध पत्र उनके समक्ष उपस्थित

प्रो आभा सैनी

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, जैन कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर

ईमेलः abasaini0374@gmail.com

प्रो सुषमा सैनी

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, डी0ए0वी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर

ईमेलः sushmasaini13800@gmail.com

Publisher: Anu Books, DOI: https://doi.org/10.31995/Book.AB356-A26. Ch.16

Book Name : भारतीय ज्ञान परम्परा और सामाजिक विज्ञान

Plagiarism Report: 05%

चुनौतियों और मुद्दों को भी विश्लेषित करता है एवं इस शोध पत्र में उनकी सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का भी वर्णन किया गया है है प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक स्रोत अवलोकन द्वितीय स्त्रोत में पुस्तक, पत्र पत्रिकाएं और विभिन्न रिपोर्ट और वेबसाइट का प्रयोग किया गया है।

साहित्य पुनरावलोकन– डॉक्टर विप्लव (2013) भारतीय महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण और धारणाओं में हो रहे बदलाव विशेष रूप से वैश्वीकरण के संदर्भ में उनकी भूमिका को विश्लेषित करते हैं डॉक्टर कल्पना पटेल (2013) लिखती है कि भारतीय संस्कृति में महिलाओं को विशेष रूप से सम्मान दिया जाता है और आज की महिलाएं सशक्त हैं उनकी पुस्तक नारी जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रभाव डालती है डॉ शांता भट्ट (1995) व्याख्या करती है कि भारतीय महिलाओं की विभिन्न समय में भूमिका किस प्रकार की रही है और राजनीति के क्षेत्र में उनकी भूमिका को किस तरीके से मूल्यांकित किया जा सकता है उमाशंकर झा और प्रेमलता पुजारी (1998) लिखते हैं कि महिलाओं के आंदोलन के द्वारा आर्थिक विषमता सामाजिक न्याय और पारंपरिक सामाजिक आर्थिक व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया गया है और उसमें उनकी क्या भूमिका रही है डॉ सावित्री माथुर (2014) भारत में महिलाओं के अधिकारों और उनकी व्यवहारिक स्थिति की व्याख्या करती हैं।

भारत में महिलाओं की भूमिका– आधुनिक काल में स्वतंत्रता के बाद से महिलाओं की स्थिति एवं भूमिका बेहतर हुई है भारतीय संविधान के द्वारा प्रदत्त संवैधानिक अधिकारों और कानूनी अधिकारों के माध्यम से उनकी स्थिति सशक्त बनी है भारतीय संविधान महिलाओं को पुरुषों के बराबर समानता, स्वतंत्रता और गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार देता है। अनुच्छेद 14 (समानता), 15(1) (भेदभाव निषेध), 15(3) (विशेष प्रावधान), 16 (रोजगार में अवसर), और 21 (निजी स्वतंत्रता) के तहत महिलाएं कानूनी रूप से सुरक्षित हैं। साथ ही, राजनीतिक भागीदारी (अनुच्छेद 243) 73 वें–74वें संशोधन में पंचायतों, निकायों में आरक्षण व समान कार्य के लिए समान वेतन (अनुच्छेद 39) न्यायसंगत कार्यस्थल (अनुच्छेद 42) महिलाओं को मातृत्व सहायता (maternity relief) का अधिकार सुनिश्चित है वर्तमान समय में महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सशक्त पहचान कायम किए हुए हैं भारतीय समाज में परिवार की रीढ होने के साथ–साथ वे प्रमुख शिक्षाविद, कानूनविद, नेतृत्व कर्ता, प्रशासनिक अधिकारी तकनीकी विशेषज्ञ और सेना में भी प्रमुख पदों पर कार्यरत है भारत के प्रथम नागरिक के पद पर महिला राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू वर्तमान समय में कार्यरत है भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी आयरन लेडी के नाम से प्रसिद्ध है कल्पना चावला को अंतरिक्ष यात्री के रूप में कोई नहीं भूल सकता है वर्तमान समय में महिलाएं अपने उद्यम और स्वरोजगार के माध्यम से भारत के आर्थिक विकास में भी अपना योगदान दे रही है फाल्गुनी नायर, किरण मजूमदार, डॉ आनंदीबाई जोशी, पीटी उषा, मैरी कॉम, मिताली राज जैसे अनेकों नाम महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– वैदिक युग से पूर्व भारतीय उपमहाद्वीप में मातृसत्तात्मक समाज रहा है और महिलाओं की स्थिति देवी स्वरूप रही है धरती को भी माता के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है अहिल्या सीता द्रौपदी मंदोदरी और तारा अपने समय के महान महिलाओं में शामिल है वैदिक युग में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था वह शिक्षित थी गार्गी और मैत्री इसका उदाहरण है समाज में उच्च स्थान प्राप्त करते हुए वह धार्मिक अनुष्ठानों में भी पुरुषों के समान बराबर अधिकार रखती थी समाज की समृद्धि में भी उनका योगदान अतुल्य है लोपामुद्रा घोष आपला सूर्य सावित्री यामी जैसे नाम ऋग्वेद में पाए जाते हैं जिन्होंने महिलाओं को स्थिति को और अधिक मजबूत बनाया है।

मध्यकालीन युग में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई और वह घर की चार दिवारी तक उनकी भूमिकाएं सीमित हो गई शिक्षा में भी उनकी कमी देखी गई पर्दा पर्दा बाल विवाह जोहर सती प्रथा जैसी बुराइयां उस समय में देखी गई यद्यपि वास्तुकला संगीत और नृत्य के क्षेत्र में इस समय भी महिलाओं ने अपना योगदान दिया पल्लव नरेश रंगपटक की रानी ने प्रसिद्ध कैलाश नाथ मंदिर कांची में बनवाने के लिए प्रेरित किया चालुक्य नरेश की रानी लोक महादेवी ने बीजापुर में अद्भुत लोकेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया मालवा की रानी रूपमती कवित्री के रूप में और मीराबाई भक्ति गीत के लिए जानी जाती हैं मुगल काल के समय में कई प्रसिद्ध महिलाओं ने नेतृत्व की कमान भी संभाली रानी दुर्गावती ऐसा ही एक नाम है जिन्होंने महान शासक महान मुगल शासक अकबर के विरोध में नेतृत्व की कमान संभाली थी रजिया बेगम दिल्ली की सुल्तान का नाम सैन्य और प्रशासनिक दक्षता के लिए प्रमुख माना जाता है बाबर की कवियत्री पुत्री गुलबदन बेगम हुमायूं नामा के लिए जानी जाती है नूरजहां अपनी बौद्धिक और प्रशासनिक क्षमताओं के लिए जहांआरा बेगम अपनी स्थापत्य दक्षता के लिए जबूनिशा अपनी लेखन क्षमता के लिए मशहूर थी अहिल्याबाई होलकर प्रशासन की प्रमुख बनी ताराबाई ने अपने बेटे शिवाजी को मराठा साम्राज्य का भाग्य निर्धारण करने के लिए निर्देशित किया वह स्वयं भी अत्यंत साहसी महिला थी और युद्ध नीति में निपुण थी चांद बीबी अपनी बहादुरी और साहस के लिए जानी गई।

औपनिवेशिक काल में महिलाओं ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया 1857 का स्वतंत्रता संग्राम आजादी के संघर्ष के इतिहास में अग्रणीय स्थान रखता है 1857 की क्रांति से पूर्व भी जगह–जगह विद्रोह शुरू हो गए थे जिसमें भारतीय महिलाओं ने न केवल भागीदारी की बल्कि विद्रोह का नेतृत्व भी कियाद्य सन्यासी विद्रोह की नेत्री देवी चौधरानी, विद्रोह की नेत्री रानी शिरामणि, कित्तूर की वीर रानी चेन अम्मा का नाम प्रमुख है।

1857 की क्रांति में महिलाओं की व्यापक हिस्सेदारी रहीद्य झांसी की रानी लक्ष्मीबाई 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की आजादी की महान वीरांगना रहीद्य लखनऊ की बेगम हजरत महल के अलावा रानी तुलसीपुर, रानी रामगढ़, रानी तेजबाई,

जमानी बेगम, महारानी तपस्विनी जैसी रानियों और बेगमें तो लड़ ही रही थी। नर्तकी अजीजन बाई और कुमारी मैना जैसी कोमल किशोरियाँ भी पीछे नहीं थी। इस क्रांति के दौरान हजारों स्त्रियों को गोली मारी गई थी या फांसी दे दी गई थी।

भारतीय स्वतंत्रता संघर्श में महिलाओं ने अपनी परंपरागत भूमिका को तोड़ते हुए समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपने साहस और कार्यों से परिवर्तन की मुख्य निर्माता की भूमिका निभाई महिलाओं की इस बदलती हुई भूमिका का प्रमुख कारण भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में राष्ट्रवादी चेतना का जागृत होना था उन्होंने महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के प्रति जागरुक करते हुए उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला शिक्षाविद और समाज सुधारको में सबसे पहला नाम सावित्रीबाई फुले का आता है सावित्रीबाई फुले ने अपने पति श्री ज्योतिबाराव फुले के साथ साथ मिलकर शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई उन्होंने महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखने वाली परंपराओं और सामाजिक बाधाओं को तोड़ा 1848 में पुणे में भिंड़ीवाड़ा में भारत में महिलाओं के लिए पहला स्कूल खोला राष्ट्रवादी आंदोलन को मजबूत करने और सामाजिक सुधार के लिए आवाज उठाने में एनी बेसेंट का नाम उल्लेखनीय है उन्होंने 1917 में वूमेन इंडिया एसोसिएशन की स्थापना की जिसमें महिलाओं की शिक्षा राजनीति में भागीदारी नगर निगम और स्थानीय बोर्ड संविधान सभा में महिलाओं की भागीदारी जैसे मुद्दे उठाए गए।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न सामाजिक और आर्थिक स्तर और पृष्ठभूमि की महिलाओं ने भागीदारी की शिक्षा महिलाओं में सुधार का एक माध्यम बनी पंडित रमाबाई, सुमित्रा सरल राय, अनसूयासाराभाई जैसे महिला समाज सुधारकों के नाम भी उल्लेखनीय है जिनके द्वारा शिक्षा के माध्यम से कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया गया सविनय अवज्ञा आंदोलन भारत छोड़ो आंदोलन जैसे आंदोलन में अरुणा आसफ अली, कमला देवी चट्टोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, दुर्गाबाई देशमुख, निर्मला देशपांडे और सरोजिनी नायडू जैसी महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई स्वतंत्रता संघर्ष की क्रांतिकारी गतिविधियों में भी कनकलता बरूआ, लक्ष्मी सहगल, दुर्गा भाभी जैसी महिलाओं ने भाग लिया भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को एक नई दिशा प्रदान की।

मुद्दे और चुनौतियां – भारत में महिलाओं के विरुद्ध अपराध एक चिंताजनक मुद्दा है जो महिला सशक्तिकरण के बावजूद देश के विकास में बाधा उत्पन्न करता है राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार कानूनी उपाय और बढ़ती हुई जागरूकता के बावजूद भी महिलाओं के विरुद्ध अपराध निरंतर बढ़ रहे हैं 2021–2023 मैं महिलाओं के खिलाफ लगभग 13 लाख अपराध के मामले दर्ज किए गए लैंगिक असमानता, कार्य स्थल पर तनाव ,मानसिक दबाव ,कार्य स्थल पर वेतन की असमानता और महिलाओं की सुरक्षा, घरेलू हिंसा, पोषण की कमी जैसी

चुनौतियां अब भी उनके समक्ष खड़ी हुई है मानव तस्करी, यौन उत्पीड़न जैसे गंभीर चुनौतियां उनके सम्मान और गरिमा को ठेस पहुंचती है।

सामाजिक क्षेत्र– भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति निम्न है भारत में पितृसत्तामक समाज और संयुक्त परिवार की व्यवस्था देखने को मिलती है जिसमें परिवार के पुरुष सदस्यों को तो अनेक अधिकार प्राप्त है किंतु स्त्रियों को उनसे वंचित किया जाता है प्रथम जन्म के समय से ही लड़का और लड़की में अंतर, उनकी शिक्षा में अंतर, उनके पालन पोषण में अंतर उनकी सामाजिक स्थिति को खराब कर देता है संयुक्त परिवार में वह सार्वजनिक जीवन से अनभिज्ञ बनी रहती है और उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं हो पता है वह सास ननंद के उलाहन और प्रताड़नाओं का शिकार बनती है परिवार के सदस्यों की सेवा में ही उसका जीवन व्यतीत हो जाता है भारतीय समाज में पर्दा प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनरविवाह, बहु पत्नी विवाह, अंतरजातीय विवाह का अभाव, बेमेल विवाह जैसी वैवाहिक समस्याएं भी बनी हुई है वर्तमान समय में दहेज एक गंभीर समस्या बनी हुई है जिसके कारण न जाने कितनी स्त्रियों को यातनाएं दी जाती है आत्महत्या होती है और पारिवारिक विघटन होते हैं।

भारतीय महिलाएं परिवार में बच्चों के लालन पालन और बुजुर्गों की सेवा करने और संपूर्ण परिवार की देखभाल में प्रमुख भूमिका निभाती है लेकिन इसके बावजूद भी भारतीय समाज में महिलाओं की निम्न स्थिति है जिसका कारण उनमें शिक्षा की कमी होना, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक न होना, पारंपरिक सामाजिक मान्यताएं और रूढिया, सामाजिक भेदभाव, आर्थिक आत्मनिर्भरता ना होना है भारतीय समाज में महिलाओं की सुरक्षा की समस्या प्रमुख है राष्ट्रीय वार्षिक महिला सुरक्षा रिपोर्ट और सूचकांक (NARI) 2025 भारत के शहरी क्षेत्र में महिला सुरक्षा का विस्तृत सुरक्षा विश्लेषण प्रस्तुत करता है जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा का स्कोर 65% है विकास के बावजूद भी अभी महिलाएं शहरों में 40% के करीब अपने आप को सुरक्षित महसूस करती है छात्राएँ और युवा पेशेवर अधिक असुरक्षित पाई गईं। सबसे सामान्य रूप मौखिक उत्पीड़न (58%) रहा, इसके बाद शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक और यौन उत्पीड़न आते हैं। पड़ोस और सार्वजनिक परिवहन उत्पीड़न का का सबसे अधिक प्रमुख क्षेत्र माने गए हैं

2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में कुल जनसंख्या 121 करोड़ थी, जिसमें महिलाओं की संख्या लगभग 58.64 करोड़ थी। यह कुल जनसंख्या का लगभग 48% था। हाल के NFHS–5 (2019–21) के आंकड़ों के अनुसार, देश में लिंगानुपात में सुधार हुआ है और अब 1000 पुरुषों पर 991–1020 महिलाएं (ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक) होने का अनुमान है 2011 में यह 943 (प्रति 1000 पुरुष) था 2011 की जनगणना में महिला साक्षरता 65.4% थी, जो अब बढ़कर 2023–24 के आंकड़ों (PLF) के अनुसार लगभग 74.6% तक पहुंच गई है। रूढ़िवादी रवैये के कारण कई लड़कियां स्कूल छोड़ देती हैं। भारत में महिलाओं को अनेक मानसिक दबाव से

गुजरना होता है ग्रामीण क्षेत्रों में मासिक धर्म से जुड़े सामाजिक कलंक व स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव इस समस्या से संबंधित है। कुपोषण का कारण भारत में गरीबी, विकास की कमी, जागरूकता की कमी, अशिक्षा और सामाजिक–सांस्कृतिक कारण हैं। यद्यपि NFHS–5 (2019–2021) के अनुसार, 15–49 साल की महिलाओं में कुपोषण भी 22.9% से घटकर 18.7% हो गया है।भारत में नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS–5) के पांचवें राउंड में महिलाओं और बच्चों दोनों में न्यूट्रिशनल स्टेटस और एनीमिया को लेकर चिंता जताई गई है। यह मानसिक तनाव कहीं बीमारियों को जन्म देता है आत्महत्या की ओर अग्रसर करता है कॉविड–19 के समय में घरेलू हिंसा के कारण महिलाओं पर इस मानसिक दबाव की स्थिति और भी अधिक पड़ गई थी।

आर्थिक क्षेत्र – भारत में महिलाओं की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है लेकिन फिर भी भारत में महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण वित्तीय स्वतंत्रता, कौशल विकास और उद्यमिता के माध्यम से तेजी से बढ़ रहा है। गांव की कुटीर उद्योग धंधों की उद्यमिता से लेकर देश की कारपोरेट जगत तक महिलाएं विकसित भारत 2047 का स्वप्न सरकार करने में लगी है 9 करोड़ से अधिक महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों (SHG) से जुड़ी हैं, स्वयं सहायता समूह (SHG) ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बना रहे हैं।जबकि मुद्रा योजना के 68% लाभार्थी महिलाएँ हैं। 2023–24 तक महिलाओं के नेतृत्व वाले MSME बढ़कर 1.92 करोड़ हो गए हैं। लखपति दीदी, मुद्रा योजना, और स्टार्टअप इंडिया जैसी सरकारी पहलों से महिलाएँ रोजगार उत्पन्न कर रही हैं।लखपति दीदी योजना का लक्ष्य ग्रामीण महिलाओं को उच्च आय वाले रोजगार से जोड़ना है। PM मुद्रा योजना के तहत 35 करोड़ से अधिक ऋण महिलाओं को मिले हैं, और PM स्वनिधि में 44% लाभार्थी महिलाएं हैं। नमो ड्रोन दीदी तकनीक के माध्यम से महिलाएं आर्थिक रूप से मजबूत बन रही है। डीपीआईआईटी पंजीकृत लगभग हर दूसरे स्टार्टअप में कम से कम एक महिला निदेशक है पीएलएफएस (PLFS) के आंकड़ों के अनुसार 2017–18 से 2023–24 के बीच महिला रोजगार दर लगभग दोगुनी हो गई है महिला बेरोजगारी दर 2017–18 में 5.6 प्रतिशत से घटकर 2023–24 में 3.2 प्रतिशत हो गई ग्रामीण भारत में महिला रोजगार में 96 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 43 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है नारी शक्ति भारत को विकसित भारत की ओर ले जा रही है।

खराब मातृत्व स्वास्थ्य ,महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) का कम होना (लगभग 25.1%), समान कार्य के लिए समान वेतन न मिलना, और अवैतनिक घरेलू कार्य का बोझ संपत्ति के स्वामित्व में कमी जैसी आर्थिक चुनौतियों का सामना अभी भी भारत में महिलाएं कर रही है।डिजिटल क्षेत्र में भी महिलाओं को धमकाने और अश्लील सामग्री से निशाना बनाने के मामले बढ़ रहे हैं। प्रौद्योगिकीय और साइबर खतरे डिजिटल प्लेटफॉर्मों के उदय के साथ महिलाओं को ऑनलाइन माध्यम से उत्पीड़न एवं दुर्व्यवहार के नए रूपों का सामना करना पड़ रहा है।

ऑनलाइन धमकी या साइबरबुलिइंग, पीछा करना या स्टाकिंग (stalking) और अंतरंग तस्वीरों की बिना सहमति साझेदारी साइबर threats, ऑनलाइन हरासमेंट ,डॉक्सिंग AI जेनरेटेड डीप फेक जैसे मुद्दे आम बनते जा रहे हैं, ग्लोबल जेंडर रिपोर्ट 2023 के अनुसार, आर्थिक भागीदारी में भारत 146 देशों में से 127 वें स्थान पर है, जो गंभीर रूप से व्याप्त लैंगिक पूर्वाग्रहों को उजागर करता है।आर्थिक सर्वेक्षण– 2023 के अनुसार, 90% से अधिक महिला श्रमिक अनौपचारिक क्षेत्र में हैं, जिससे उनके लिये उत्कृष्ट श्रम स्थितियाँ उपलब्ध नहीं हो पाती जो कम वेतन वाले हैं तथा इनमें सामाजिक सुरक्षा का अभाव है।

राजनीतिक क्षेत्र – भारत में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति सामाजिक और आर्थिक स्थिति की तुलना में बेहतर है राजनीतिक सक्रियता और मतदान महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के सबसे मजबूत क्षेत्र हैं। भारत में राजनीति में महिलाओं की स्थिति मतदाता के रूप में भागीदारी रिकॉर्ड स्तर (2024 में 65.8%) पर है, महिलाओं का मतदान प्रतिशत मैं वृद्धि एक बड़ा सकारात्मक बदलाव है। लेकिन विधायिका में प्रतिनिधित्व अभी भी कम(लोकसभा में14% और विधानसभाओं में 9%) है। 18वीं लोकसभा (2024) में महिला सांसदों की संख्या बढ़कर 74 (लगभग 13.6%) हो गई है, जो अब तक का सर्वाधिक है, लेकिन वैश्विक औसत से काफी कम है। 1977 में यह संख्या घटकर केवल 19 रह गई। 21वीं सदी में कुछ सुधार अवश्य दिखाई देता है। 2009 में 59 महिला सांसद चुनी गईं, 2014 में यह संख्या 62 हुई और 2019 में बढ़कर 78 तक पहुँच गई, जो अब तक का उच्चतम स्तर है। 2024 के चुनाव में यह संख्या थोड़ी घटकर 74 रह गई। महिला आरक्षण अधिनियम, 2023 वर्ष 2029 के बाद लागू होगा।

73वें और 74वें संशोधन के बाद स्थानीय निकायों (पंचायतों, नगरपालिकाओं) में महिलाओं की भागीदारी 44% से अधिक है, जो जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण दिखाता है। राजनीतिक सहभागिता में महिलाएं राष्ट्रपति प्रधानमंत्री और राज्यों के मुख्यमंत्री के रूप में अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कर नेतृत्व क्षमता को भी प्रदर्शित कर चुके हैं श्रीमती प्रतिभा पाटिल भारतीय राष्ट्रपति के पद को सुशोभित कर चुके हैं श्रीमती मीरा कुमार लोकसभा की पहली महिला अध्यक्ष रही है भारत की बहुदलीय पार्टी प्रणाली के अधिक प्रतिस्पर्धी होने के कारण राजनीतिक दलों ने महिला मतदाताओं के बीच अपनी पहुंच बढ़ा दी है। इसमें सबसे बड़ी पार्टियों में महिला विंग का गठन भी शामिल है। भाजपा का विंग भाजपा महिला मोर्चा है और कांग्रेस में अखिल भारतीय महिला कांग्रेस कमेटी हैराजनीतिक दलों में महिलाओं की भागीदारी समान अधिकारों की बढ़ती मांग से जुड़ी है।

हालाँकि जमीनी पितृसत्तात्मक चुनौतियाँ जारी हैंराजनीति में धनबल और बाहुबल का उपयोग, टिकट वितरण में कम भागीदारी और हिंसा का डर अभी भी बड़ी बाधाएं हैं। कमजोर कानून प्रवर्तन और न्यायिक प्रणाली कानूनी प्रणाली में व्याप्त अकुशलताएँ भारत में महिलाओं की भूमिका को प्रभावित करते हैं विधिक और

विधि प्रवर्तन प्रणालियों में व्याप्त भ्रष्टाचार महिलाओं के विरुद्ध अपराधों से निपटने के प्रयासों में बाधा उत्पन्न कर सकता है, क्योंकि रिश्वतखोरी और कदाचार के कारण मामलों को दोषपूर्ण तरीके से निपटाया जा सकता है या निरस्त किया जा सकता है। कई क्षेत्रों में अपराधों से प्रभावी ढंग से निपटने और अपराधों की जाँच करने के लिये कार्यात्मक पुलिस स्टेशन, फोरेंसिक प्रयोगशालाओं और आपातकालीन सेवाओं जैसी आवश्यक अवसंरचना का अभाव पाया जाता है। महिलाओं को ग्लास सीलिंग अवधारणा को तोड़ने और सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्रों में नेतृत्वकारी पदों तक पहुँचने में महत्त्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है प्रतिनिधित्व की यह कमी निर्णय लेने में महिलाओं की भूमिका को सीमित करती है और लैंगिक रूढ़िवादिता को कायम रखती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव – भारत के निर्माण में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है इसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की बात की जाए या स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व की उनके योगदान को भारत के निर्माण में नकारा नहीं जा सकता है अब वह अपनी ताकत को दबाने और अपने काम पर दबाव डालने वाली भारी मुश्किलों के खिलाफ अपनी किस्मत बेहतर बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं। महिलाओं को शिक्षा, जागरूकता, हर लेवल पर काउंसलिंग, आर्थिक आजादी, डिजिटल युग में तकनीक की सही जानकारी होना और उनके लिए कोटा देकर मजबूत बनाना, महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के सबसे असरदार तरीके हैं। महिला सशक्तिकरण देश के विकास में महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाता है और राष्ट्र निर्माण को मजबूत बनाता है।

सन्दर्भ

1. बी.एल. ग्रोवर यशपाल, (1985), "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा संवैधानिक विकास", एस. चंद एंड कंपनी लि., नई दिल्ली।
2. डॉ भट्ट शांत, (1995), "वूमेन पार्लियामेंट इन इंडिया", शिव पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, उदयपुर, भारत।
3. डॉ. पटेल कल्पना, (2013), "भारतीय संस्कृति एवं महिला सशक्तिकरण", पैराडाइज पब्लिशर्स, जयपुर, भारत।
4. डॉ. विप्लव, (2013)," वूमेन कंट्रीब्यूशन इन इंडिया", राहुल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
5. डॉक्टर माथुर सावित्री, (2014), "महिलाएं एवं मानव अधिकार", आस्था प्रकाशन, जयपुर।
6. दिवान रेणु, (2010), "आजादी की महिलाएँ", एजुकेशनल बुक सर्विस, नई दिल्ली।
7. शर्मा मंजू, (2009), "भारतीय राजनीति में महिलाओं का योगदान", राज पब्लिशिंग हाउस ,जयपुर।

8. एस एल नागौरी एवं कांटा नागोरी,(1997)," भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान" सुरभि पब्लिकेशन, जयपुर।
9. उमाशंकर झा और प्रेमलता पुजारी,(1998), "इंडियन वूमेन टुडे", कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
10. योजना, सितंबर, 2021
11. http:/www-pib-gov-in
12. www-navbharattimes-indiatimes-com
13. www-drishtiias-com